Dr. Madan Paswan, History.
B.A. Part-I (Sub.) Paper; Topic: Sufism.
Continue of Lecture No. 32.

Lecture No. 35
Date: 30.7.2020

दाराशिकोह की देखरेख में दो संस्कृत ग्रंथों "भगवद्गीता" और "योग वशिष्ठ" का फारसी में अनुवाद किया गया। दाराशिकोह ने स्वयं भी 52 उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया और इसको 'सिर्र-ए-अकबर (The Great Secret)' नाम दिया। उसी के अनुवाद के माध्यम से 18वीं शताब्दी में यूरोप में उपनिषदों की जानकारी हुई।

फिरदौसी: यह सुहरावर्दी सिलसिला की एक शाखा थी। इसकी स्थापना शेख शरफुद्दीन याह्या मनेरी ने बिहार के राजगीर में की थी।

कलंदरी संप्रदाय के सूफी इस्लामी कानून को नहीं मानते थे तथा घुमंतु फकीर का जीवन बिताते थे। वे निंदनीय माने जाते थे।

कश्मीर में शेख नूरुद्दीन वली द्वारा ऋषि संप्रदाय की स्थापना की गयी। इस पर शैव मत का भी प्रभाव था। यह कश्मीर के ग्रामीण परिवेश में विकसित हुआ। इस पर शैव संत लालदेद का काफी प्रभाव था।

* भारत में प्रमुख सूफी संप्रदाय

संप्रदाय	संस्थापक	विशेष
1. चिश्ती सिलसिला	शेख मुइनुद्दीन चिश्ती	अन्य प्रमुख संत – अब्दुल हामिद नागौरी, कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी थे।
2. सुहरावर्दी सिलसिला	शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी	अन्य संत बहाउद्दीन जकारिया
3. कादिरी सिलसिला	अब्दुल कादिर जीलानी	दारा शिकोह का संबंध एवं शेख अहमद सरहिन्दी।
4. शत्तारी सिलसिला	अब्दुल शत्तारी	तानसेन का संबंध इसी सिलसिले के संत शेख मुहम्मद गौस से था।

सूफीमत और क्षेत्रीय साहित्य

मुगल काल के सूफीवाद की सहायता से क्षेत्रीय भाषाओं का भी विकास हुआ। विशेषकर देश के उत्तर-पश्चिम भाग में। पश्तो साहित्य का विकास बायाजिद अंसारी के खैर-उल-बयान से शुरू हुआ। बायाजिद अंसारी रोशनिया परंपरा के संस्थापक थे।

Continue........